असह्यपीडं भगवन्नृणमन्त्यमवेहि मे ।

अरुन्तुदमिवालानमनिर्वाणस्य दन्तिनः ।।71।।

अन्वय भगवन् अनिर्वाणस्य दन्तिनः अरुन्तुदम् आलानम् इव मे अन्त्यम् ऋृणम् असह्यपीडम् अवेहि।

अनुवाद हे भगवान् ! मेरे इस अन्तिम पैतृक ऋण को इस प्रकार (मेरे लिए) दु:सह (दुखदायी) समझो जिस प्रकार न नहलाए हुए हाथी को उसके मर्मस्थल को बींधने वाला, (उसको) बाँधने का खूँटा असह्य पीड़ा पहुंचाता है।

टिप्पणियाँ

असह्यपीडम् असां (सोढुम् अशक्या) पीडा यस्मिन् तत् (बहुव्रीहि)। अत्यधिक कष्टदायक। ऐसा कष्ट जो सहन नहीं किया जा सकता।

अवेहि अव उपसर्ग धातु इ लोट्, मध्यम पुरुष एकवचन। तुम समझो। आप जानो।

अरुन्तुदम् (मर्मस्थल) तुदति इति (अरुम् तुद् खश्)। मर्मस्थल को काटने वाला, हृदय आदि कोमल स्थानों को बींधने वाला। 'आलानम्' का विशेषण।

आलानम् वह दृढ़ स्तम्भ जिसके साथ हाथी को बांधा जाता है। गजबन्धनस्तम्भ। वस्तुत: यह वह स्तम्भ है जो हाथी को पीड़ा पहुंचाता है। क्योंकि गले में यदि रस्सी पड़ी भी हो तो भी हाथी के स्नान करने में बाधा नहीं पहुंच सकती किन्तु वह दृढ़ स्तम्भ से बाँधा गया हो तो वह स्नान नहीं कर सकता। इसके अतिरि महाकवि यहां महाराज दिलीप की मनोव्यथा व्यक्त करना चाहता है, शारीरिक व्यथा नहीं। अत: हाथी की-सी

मनोव्यथा का ही उल्लेख आवश्यक है। स्तम्भ हाथी की मनोव्यथा का कारण है जबकि रस्सी शारीरिक व्यथा ही देती है।

अनिर्वाणस्य न अस्ति निर्वाणं यस्य (बहुव्रीहि) असौ, अनिर्वाणः, तस्य। वह हाथी जिसने स्नान नहीं किया है। 'दन्तिः' का विशेषण। निर्वाण का अर्थ है: गज का स्नान। देखिए, **'निर्वाणं निर्वृतौ विनाशे गजमज्जने'** इति यादवः।

दन्तिनः दन्त इनि, षष्ठी एकवचन।

इसी तरह के भाव की अभिव्यंजना कही और भी हुई है.**'सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः।'**